SHIKSHA BODH: The Journal of Education and Humanities,
ISSN: 3139-5880, Impact Factor: 6.50,
Volume-1|Issue-2| April-June, 2026

आदिवासी संस्कृति में रामकथा के संस्करण
(विविध आदिवासी जनजातियों के संबंध में)

***दीपेन्द्र कुमार**
शोधार्थी, भारतीय भाषा विभाग,
मणिपुर अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, मणिपुर
मोबा. नं. 9219793659
ईमेल-up80dk@gmail.com

सारांश

आदिवासी समाज और उनकी संस्कृति में प्राचीनता का इतिहास समाहित है। आदिवासी समाज की विविध जनजातियाँ जहाँ अपनी प्राचीनता एवं एतिहासिकता में अपना बजूद श्रीराम जोड़ती आई हैं, तो वहीं कुछेक अपने को सीधे तौर पर श्रीराम का सानिध्य प्राप्त हुई मानती आई हैं। आदिवासी समाज की प्राचीनतम परंपरा में प्रचलित एवं अविरल प्रसारित इनकी विभिन्न रामकथाओं की मौजूदगी इनके वजूद की भावना को बल देती दिखाई देती है। आदिवासी समाज की संस्कृति में उनकी मनोभाषिकता के आधार पर रामकथा के प्रचलन की परंपरा में वे रामायण के समय से ही अस्तित्व में रहे आए हैं। उनके द्वारा रामकथा के विभिन्न संस्करण उनकी भगवान श्रीराम प्रति श्रद्धा एवं भक्ति के साक्ष्य तो हैं ही। साथ रामकथा साहित्य के प्रचार एवं प्रसार के साथ अपने वजूद को भी अपनी-अपनी रामकथाओं के साथ विस्तारित करते आए हैं। प्रस्तुत आलेख के माध्यम से आदिवासी समाज की संस्कृति में प्रचलित रामकथाओं एवं रामायणों के संस्करणों पर प्रकाश डाला गया है। जो संबंधित आदिवासी संस्कृति की जनजाति के वजूद की मनोभाषिकता को भी अभिव्यक्त करती है।

बीज शब्द - आदिवासी, संस्कृति, रामकथा, समाज, जाति, जनजाति, रामायण, प्राचीनता, मनोभाषिकता।

आलेख – संसार भर में प्रचलित रामकथा के सैकडों संस्करण आज मौजूद हैं। समयांतर से ही विविध भाषाओं में अभिव्यक्त एवं विभिन्न संस्कृति, समाज व समुदायों की अनेक जातियाँ-जनजातियाँ परंपरागत रूप में रामकथाओं का अनुसरण करती आई हैं। आदिवासी समाज की विविध जनजातियों द्वारा अपनी-अपनी लोकभाषाओं में रामकथाओं को नवीन रूप में संकलित एवं रचनाकृत कर समय के साथ अविरलता से चलाएमान करते आए हैं। रामकथा साहित्य की प्राचीनता की कथा का आधार आदिकवि बाल्मीकि जी हैं। बाल्मीकि जी की रामायण कथा के आधार पर अब

तक भारी तादाद एवं विभिन्न भाषाओं में आज रामकाव्य की रचनाएँ संभव हो सकी हैं। वैसे तो रामकथा के पात्रों के विषय में वैदिक साहित्य में उपलब्ध नामों से समानता तो प्राप्त होती है, किंतु वैदिक साहित्य के पात्र ही आदिकवि बाल्मीकि जी की रामायण के पात्र हैं, इस बात की स्पष्टता नहीं है। हालांकि प्राचीनता की बात की जाए तो रामकथा के समयांतर संस्करण उपलब्ध हैं किंतु ऐसे कई संस्करण हैं, जो अपने समाज में प्रचलित अपनी रामकथा को प्राचीन (राम के समय से सीधे जुड़ा) मानते आए हैं। आदिवासी संस्कृति की ऐसी ही जनजातियों द्वारा प्रचलित रामकथाओं के विषय में इस आलेख में जानकारी प्रस्तुत की गई है। आदिवासी संस्कृति की प्रचलित रामकथाओं व रामायणों का इस प्रकार से देखा जा सकता है-

कर्बी रामायण - भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्र में बसने वाली कर्बी जनजाति अपनी मूल उत्पत्ति त्रेता युग में हुए रामायण युद्ध के समय से बताती व मानती है। कर्बी समाज कहता है कि रामगीत के पहले कर्बीयों में कोई गीत ही नहीं था। इसलिए कर्बी जनजाति के परम देवता "हेम्फु" ने दिव्य गायक "रंगसिना" को गीतों की रचना करने को कहा। "रंगसिना" ने मानव रूप धारण करके गीतों की रचना की। यही "कर्बी रामायण" कहलाता है। कर्बी आज भी श्रीराम और माता सीता की पूजा करते हैं। राम कथा का गायन होता है । राम कथा के अंत में गायक (लुन्से) एक विशेष पूजा करते हैं जिसे "राम-लखन आबुर" कहा जाता है। कर्बी रामायण वाल्मीकि रामायण और तुलसी रामायण से समानता रखता है। लंका के राज्य में बारह (दश नहीं) सिर वाला रावन (रावण) तथा तीन भाई विभीखन (विभीषण) महीराबन (महिरावण) और मेकनात (मेघनाथ) का उल्लेख कर्बी रामायण में है। रावण शक्तिशाली होते हुए भी अन्य को उत्पीड़ित करता था। इस कारण छोटे देवता परमेश्वर के पास जाते हैं और रावण के मृत्यु की प्रार्थना करते हैं। परमेश्वर ने राम लक्ष्मण के रूप में जन्म लेने का निर्णय लिया और लक्ष्मी को, कनकपो के घर में सीता के रूप में जन्म लेने का आदेश दिया।



कर्बी कथा में राजा दशरथ को अयोध्या का राजा "बनोपमो" कहा गया है। उनकी दो पत्नियां थी, चा-कर्बी और हियेपी। दोनों पत्नियों को संतान न होने के कारण बनोपमो राजा यम के पास गया तथा संतान के लिए प्रार्थना की। और संतान हो गई। राम-सीता विवाह की कथा वाल्मीकि रामायण जैसी है। राम परशुराम संवाद में भी समानता दिखती है। सूर्पनखा (दुर्पनखा) के कहने पर सीता का अपहरण तथा सीता खोज में जटायु, हनुमान आदि वीरों का वर्णन

लगभग एक जैसा ही है। सीता का वन गमन तथा वाल्मीकि आश्रम का उल्लेख भी कर्बी रामायण में है। यहाँ लव-कुश के जन्म की कथाओं में भिन्नता दिखती है। लव-कुश द्वारा घोड़े को रोकना तथा हनुमान, राम-लक्ष्मण के साथ हुए युद्ध के वर्णन में डी भिन्नता दिखती है।

कर्बी रामायण में एक मनोरंजक प्रसंग बताया गया है कि रावण से युद्ध करते समय राम एक पूजा करना चाहते थे। परंतु पूजा के लिए पुरोहित का कार्य करने वाला एकमात्र व्यक्ति रावण ही था। राम ने अत्यंत श्रद्धा पूर्वक रावण को आमंत्रित किया और रावण ने आमंत्रण स्वीकार कर लिया। पूजा की विधि में राम को रावण के सन्मुख झुक कर नमस्कार करते देख लक्ष्मण क्रोधित हो गए। राम ने समझाया कि पुरोहित के रूप में रावण को झुककर नमन कर रहा है। पूजा समाप्ति के बाद रावण ने राम को विजय का आशीर्वाद दिया। यह कहानी कर्बी परंपरा की विशेषता दर्शाती है कि शत्रु भी आमंत्रित होने पर पुरोहित बनकर जाने तथा पुरोहित का कार्य करने से विमुख नहीं होता है। कर्बी रामायण स्पष्ट बताती है कि उसकी परंपरा मौखिक है, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को कंठ के द्वारा दी जाती थी।

बिरहोर जनजाती - छोटा नागपुर झारखंड के बिरहोर जनजातियों की रामायण 'बिरहोर रामायण' कहलाती है। इस रामायण में भगवान सिंगबोगा ने पृथ्वी का निर्माण किया और उसे राजा रावण को सौंप दिया। किंतु रावण आतातई बन गया और मानव समूह को मारने लगा। तब मानव की दुर्दशा से द्रवित होकर भगवान ने वचन दिया- 'धीरज रखो, मैं किसी मानव कोख से जन्म लुँगा और रावण का वध करूंगा।' बिरहोर रामायण के अनुसार राजा जनक तथा राजा दशरथ को संतान प्राप्ति के लिए तप करना पड़ा। राजा दशरथ के चार पुत्र हुए। किंतु राजा जनक के भाग्य में कुछ और ही लिखा था। इस बीच निसंतान जनक के राज्य को भीषण अकाल का सामना करना पड़ा। पंचों ने राजा से कहा कि वर्षा के लिए आप स्वयं अपने हाथों से खेत को जोतिए। जैसे राजा ने जोतना प्रारंभ किया उसके हल से बनी नाली में एक सुंदर बालिका दिखाई दी। वह हल चलाते समय (सीतान) पाई गई थी, इसलिए उसका नाम सीता रखा गया। राजा जनक उसे अपने घर ले गया तथा उसे अपनी पुत्री का उच्च पद दिया।

राजा जनक द्वारा बलि चढ़ाने के लिए राजा की पत्नी प्रतिदिन खुली जगह को गोबर से लिपती थी । एक दिन सुबह अस्वस्थ होने के कारण उसने सीता को लिपने का कार्य करने को कहा । राजा जनक के आंगन में एक बड़ा और वजनदार धनुष था जिसे कोई हिला तक न सकता था। परंतु सीता ने उसे एक और आसानी से रखा और संपूर्ण आंगन को साफ कर गोबर से लीपा। धनुष को उठाया गया था यह देखकर जनक चकित हो गया तथा सीता की शक्ति देखकर उसने आश्चर्य युक्त प्रशंसा की। यही धनुष श्रीराम-सीता के विवाह का आधार बना। श्रीराम-सीता, लक्ष्मण के वन गमन की घटना वाल्मीकि रामायण जैसी ही है। सुंदर हिरण का दिखना तथा राम को हिरण मारने को कहना भी वाल्मीकि

रामायण की ही याद दिलाता है। रावण कुटिया में आता है और सीता का अपहरण करता है। राम-रावण युद्ध प्रारंभ होता है। रावण बताता है कि उसका प्राण सोने की दीवारों से बने एक खास कक्ष में बंद है। हनुमान तथा लक्ष्मण ने रावण के महल में प्रवेश कर उस खास कक्ष को खोला और रावण के प्राण को मुक्त कर दिया। उसके बाद रावण की मृत्यु होती है।

मुंडा जनजाति - यह भारत की एक प्रमुख आदिवासी जनजाति है, जो मुख्य रूप से झारखंड, ओड़िशा, पश्चिम बंगाल और छत्तीसगढ़ के छोटा नागपुर पठार क्षेत्र में निवास करती है। खुद को यह समुदाय 'होड़ोको' यानी मनुष्य कहता है। जनजाति के मुंडाओं ने रामकथा को 'मुंडारी रामायण' बना दिया है। उनके कथानक में अयोध्या का एक गांव है, सीता एक जनजाति लड़की है जो अकाल के समय पैदा हुई तथा पाई गई थी तथा जनक एक सामान्य किसान है। सीता का रावण अपहरण कर लिया है, जब वह बकरी चराने बाहर गई थी। मुंडाओ का कहना है कि "सीता" शब्द की मुंडा व्युत्पत्ति, शब्द का ठीक-ठीक स्पष्टीकरण देती है। सीता का अर्थ सी (हल) ता (के अंदर) पाई गई। सिता, ऋग्वेद की कृषि संबंधी देवता है और मुंडारी जनजाति में मातृदेवता मानी जाती है, जैसा शबर लोग मानते है। पड़ोस की बॉन्डो जनजाति सीता को माता मानती है। उनकी दृष्टि से यह स्वाभाविक है कि धरती की माता पुनः धरती में वापस चली जाये। मुंडाओं का दावा है कि लंबी पूंछ वाले "वानर" वास्तव में जंगलों में निवास करने वाली एक जनजाति है, जो अपनी धोती इस प्रकार बांधते थे कि उसका एक भाग पुंछ की तरह पीछे लटकता था। आज भी यह पद्धति मुंडाओं में प्रचलित है। शबर जनजाति में भी यह परंपरा प्रचलित है, विशेषत: जब वे नृत्य करते हैं।



गोंड जनजाति - गोंड जनजाति के लोग अपने समाज को उच्च बताने के लिए राजा राम से अपना संबंध बताते है। उनकी विश्व निर्माण की कथा कहती है कि महादेव और पार्वती से उत्पन्न प्रथम मानव गोंड था। रावण राम के युद्ध के समय रावण के राज्य के समीप एक गोंड दंपति रहती थी, जिसे पूर्व जन्म में महादेव का श्राप था कि लंका में जाने समय जब तक राम का चरण नहीं धोयेंगे। तब तक वह पुत्रों को नहीं पाएंगे। गोंड पति-पत्नी राम की प्रतीक्षा करते रहे और राम के आगमन के बाद उसकी पूजा की उसके पैर धोए और चरणोंदक ग्रहण किया। राम ने उन्हें तीन पुत्रों का

आशीर्वाद दिया और "रावण वंशी" गोंड की पदवी दी। राम रावण से युद्ध के लिए आगे बढ़े और विजय हुये। सीता सहित लंका से वापस आते समय राम ने कुछ गोंडो को अपने साथ लाये यह "सूर्यवंशी गोंड" कहे जाने लगे। अपने पूर्वजों को राम का समकालीन बताना, यह सिद्ध करता है कि रामकथा में जनजातियों के जीवन में कितने अंदर तक प्रवेश किया है।

भील जनजाति - गुजरात, राजस्थान और मध्य प्रदेश के भीलों ने महत्वपूर्ण कार्य किया है। भील जनजाति की रामायण 'भिलोडी रामायण' के नाम से प्रचलित है। **पंचमहाल क्षेत्र** के भील आदिवासियों की मौखिक परंपरा में प्रचलित रामायण का एक विशिष्ट रूप है। यह आदिवासी संस्कृति और लोकपरंपराओं के अनूठे मेल को दर्शाती है। पंचमहलो के भिलोड़ी रामायण में सत्रह गीतो में कथा निरूपण की गई है। जिसमें बड़ा गणपति, महादेव, राम और सीता हड्डमान (हनुमान) गुरु तथा वाल्मीकि ऋषि की स्तुतियों से आरंभ किया गया है। बाल्मीकि को वालियों नामक भील बताया गया है। कथा में पारंपरिक वर्णन ही है। परंतु उसकी विशेषता आठवें गीत में दिखाई देती है। उसके ''गोहक'' नामक एक भील का शासक के संबंध में बताया गया है, जिसने वनवास में रहते, राम के पैर इस कारण धोये थी कि यदि पैर धूल मिश्रीत होगे तो उसकी नाव नारी बन जाएंगी (जैसे राम चरण से स्पर्श से चट्टान परिवर्तन होकर नारी अहिल्या बन गई थी) और वह जीविका के साधन से वंचित हो जाएगा। यह कथा तुलसीदास की कविता-वली (अयोध्या कांड चौपाई 6 तथा दशाक्षरी) में वर्णित केवट जाति के निषाद की है । उसमें निषाद ने आग्रह किया था कि राम के चरणों को धोए बिना उसके नाव में बैठने नहीं देगा, कारण वह दूसरी नाव खरीदने में असमर्थ हैं तथा उसका परिवार अपनी जीविका के लिए उसी नाव पर निर्भर है । रामायण की समाप्ति इस प्रार्थना से होती है जिससे भीलों की बुरी आदतों जैसे दारु पीना, चोरी करना करना आदि से मुक्ति का विवरण है। अंत में गायक राम के चरणों में गिरते हैं तथा उसकी दिव्यता पर अपना विश्वास व्यक्त करते हैं।

भुईया जनजाति - 'भुइयां' शब्द की उत्पत्ति 'भूमि' से हुई है, जिसका अर्थ है "धरती के पुत्र"। यह जनजाति मुख्य रूप से ओड़िशा, झारखंड, छत्तीसगढ़ और बिहार के पहाड़ी व जंगली इलाकों में निवास करती है। भुईया जनजाति कुंभकर्ण को तप करने वाला ऋषि मानती है । भुइया जनजाति की लोक मान्यताओं और संस्कृति में रामायण के पात्र कुंभकर्ण को एक राक्षस के रूप में नहीं, बल्कि एक महान तपस्वी और ऋषि के रूप में देखा जाता है। इस जनजाति की लोककथाओं के अनुसार, कुंभकर्ण ने कठिन तपस्या की थी। उनके अनुसार, ब्रह्मा जी से वरदान मांगते समय जीभ लड़खड़ाने (सरस्वती के प्रभाव) के कारण उन्होंने 'इन्द्रासन' की जगह 'निन्द्रासन' मांग लिया था, जिससे वे छह महीने सोते थे। इनकी संस्कृति में हिंदू महाकाव्यों के पात्रों को एक अलग और स्थानीय नजरिए से देखा और पूजा जाता है, जो मुख्यधारा की कहानियों से काफी अलग है।

कोल जनजाति - कोल जनजाति लंका पुर को गांव कहती हैं जहां प्राचीन काल में, एक बैगा दंपति ने अग्नि को जन्म दिया था। बैगा जनजाति कहती है कि श्री राम-लखन अपनी "अरजनी" नाम की बहिन के साथ "बण्डागारी" में रहते थे। कोल जनजाति भारतीय जनजातियों की समृद्ध लोक-संस्कृति, पौराणिक कथाओं और उनके मौखिक इतिहास का एक अद्भुत उदाहरण है। मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और उत्तर प्रदेश के क्षेत्रों में निवास करने वाली कोल जैसी प्राचीन जनजातियों का रामायण काल और भगवान राम के वनवास से गहरा संबंध माना जाता है। कोल जनजाति और लंकापुर की कथा-कोल जनजाति के लोक गीतों और कथाओं में 'लंका पुर' को एक गांव माना जाता है। इस कथा के अनुसार, प्राचीन काल में इसी स्थान पर एक बैगा दंपति ने सबसे पहले अग्नि (आग) को जन्म दिया या प्रकट किया था। जनजातीय संस्कृति में अग्नि को एक पवित्र और जीवनदायी शक्ति माना जाता है और इस खोज को वे अपने इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मानते हैं।

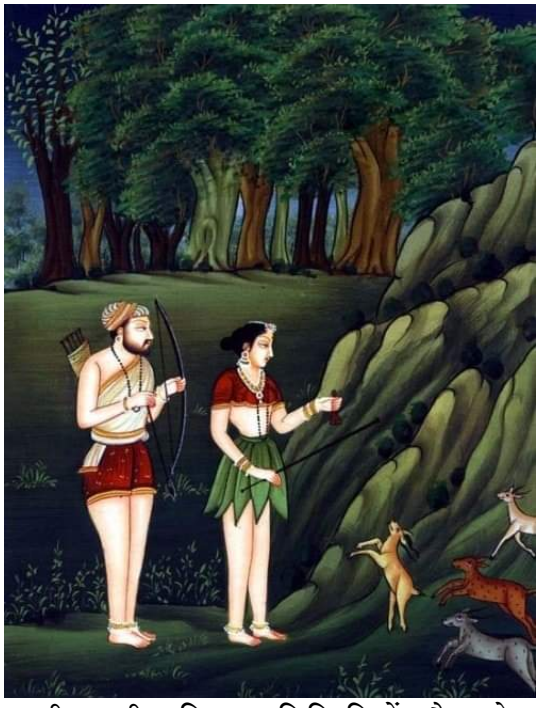
बैगा जनजाति - बैगा जनजाति की अपनी अनूठी लोक (साहित्य-राम) रामकथा है, जो वाल्मीकि रामायण से काफी अलग और उनके अपने सांस्कृतिक परिवेश में ढली हुई है। मध्य भारत (विशेषकर मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़) के जंगलों में रहने वाली यह प्राचीन जनजाति रामायण के पात्रों को अपने लोक-जीवन, भूगोल और परंपराओं से जोड़कर देखती है। बैगा जनजाति और 'अरजनी' की कथाए मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और उत्तर प्रदेश के क्षेत्रों में निवास करने



वाली बैगा जनजाति जैसी प्राचीन जनजातियों का रामायण काल और भगवान राम के वनवास से गहरा संबंध माना जाता है। बैगा जनजाति की लोककथाओं में भगवान राम और लक्ष्मण (लखन) का एक अलग ही रूप देखने को मिलता है। उनके अनुसार, श्री राम और लक्ष्मण अपनी 'अरजनी' नाम की बहन के साथ 'बण्डागारी' में रहते थे। मुख्यधारा की रामायण में श्रीराम की बहन के रूप में 'शांता' का उल्लेख मिलता है, लेकिन बैगा आदिवासियों की अपनी वाचिक (मौखिक) परंपरा है, जहाँ वे राम-लक्ष्मण को पूरी

तरह अपने समाज और भूगोल का हिस्सा मानते हैं।

कमार जनजाती - ओड़ीशा के कालाहांडी क्षेत्र में लोहार का काम करने वाले पारंपरिक समुदाय को (लौह कर्म) उड़िया भाषा में **कमार** कहा जाता है। ये लोग मुख्य रूप से लोहार होते हैं जो कृषि उपकरण जैसे हँसिया, कुल्हाड़ी, फावड़ा और सब्बल बनाते व सुधारते हैं। कालाहांडी जिले में गोंड, खोंड (कंधा), और सांवरा जैसी प्रमुख जनजातियाँ भी निवास करती हैं। कालाहांडी, उड़ीसा की कमार जनजाति कहती है की जब श्री राम के लंका पर किए गए आक्रमण के समय हनुमानजी ने लंका को जला डाला। उसे देख रावण ने श्राप दिया "संसार की सारी आग बुझ जाये"। संपूर्ण संसार की आग बुझ जाने के कारण रसोई के लिए कुछ साधन नहीं था। हनुमानजी समुद्र के पास दौड़ते गये ओर निरंकार स्वामी को बताया की "यदि संसार में कहीं आग ना रही तो श्री राम की स्थिति लज्जाजनक हो जायेगी। निरंकार ने उत्तर दिया, "अपने मस्तक को रगड़ो, उसमें से अग्नि उत्पन्न होगी। ऐसी आग को रावण का बाप भी बुझा नहीं सकेगा। हनुमानजी ने अपना मस्तक रगड़ा। उससे उत्पन्न अग्नि आज भी संसार में है।



साओरा जनजाति - यह जनजाति मुख्य रूप से उड़ीशा (विशेषकर गजपति और रायगड़ा जिले) के साथ-साथ आंध्र प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश और असम में भी पाई जाती है। भारत सरकार द्वारा 'लांजिया साओरा' को विशेष रूप से संवेदनशील जनजातीय समूह का दर्जा दिया गया है। यह समुदाय अपनी अनूठी 'इडिताल' भित्ति चित्रों और श्सोराश् भाषा व अपनी लिपि 'सोरांग सोमपेंग' के लिए जाना जाता है। साओरा जाति माता शबरी को अपना वंशज मानती है। शबरी वही भील है जो प्रत्येक बेर को चखकर देखा की वह मीठा है या नहीं और वे जूठे बेर श्री राम को समर्पित किए थे। साओरा (या सबर/सवरा) जनजाति का रामायण और रामकथा से बहुत पुराना और गहरा संबंध है, क्योंकि यह समुदाय स्वयं को पौराणिक पात्र माता शबरी का वंशज मानता है। स्थानीय जनश्रुतियों और मान्यताओं के अनुसार, भगवान राम को जूठे बेर खिलाने वाली भक्त माता शबरी साओरा (या सबर/सवरा) समुदाय से ही थीं। साओरा जनजाति भारत की सबसे प्राचीन जनजातियों में से एक है, जिसका उल्लेख रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों में मिलता है। कई क्षेत्रों में इस जनजाति की मौखिक लोककथाओं और गीतों में रामायण के प्रसंग और राम-शबरी मिलन का वर्णन मिलता है।

संथाल जनजाति- संथाल जनजाति का रामायण से गहरा और अनूठा संबंध है, जो मुख्य रूप से उनकी मौखिक लोक परंपराओं, गीतों और क्षेत्रीय सांस्कृतिक रूपांतरणों में दिखाई देता है। वाल्मीकि रामायण जैसे लिखित ग्रंथों से अलग, संथाल समाज में रामकथा का एक अपना विशिष्ट और व्यावहारिक स्वरूप है। संथाल लोक मान्यताओं के अनुसार**, संथाल जनजाति ने रावण के खिलाफ युद्ध में भगवान श्री राम की मदद की थी**। उनकी परंपराओं में माना जाता है कि अयोध्या के जंगलों से सटा हुआ जो वन क्षेत्र था, वह उनका शिकार खेलने का पारंपरिक क्षेत्र हुआ करता था और इसी वनवास काल के दौरान उनका सामना श्री राम से हुआ था। संथाल समाज के पारंपरिक लोकगीतों में **राम और कृष्ण को बहुत ही सहज, मानवीय और आनंदमयी रूप में दर्शाया गया है।** वे उन्हें किसी दूर के देवता के रूप में नहीं, बल्कि अपने ही समाज के एक नायक या रक्षक के रूप में देखते हैं जो प्रकृति और मानवीय संघर्षों से जुड़े हैं। झारखंड के दुमका जिले के एक सफा होड़ संथाल समाज का एक धार्मिक वर्ग (अनुयायी) मंगल मंडल ने **अपनी दिवंगत पत्नी कुमुदिनी हांसदा के सहयोग से पूरी रामायण को 'संताली भाषा' में लिखा है।**

कोरकू जनजाति - मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के सतपुड़ा पर्वत क्षेत्रों में निवास करने वाली कोरकू जनजाति का रामायण और उसके पात्रों (विशेषकर रावण और मेघनाद) से एक गहरा, अनोखा और अटूट संबंध है। जहां आम हिंदू समाज में रावण को खलनायक माना जाता है, वहीं कोरकू आदिवासी समाज में रावण और उनके पुत्र मेघनाद को अत्यंत आदरणीय स्थान प्राप्त है। रामायण और कोरकू जनजाति के इस अनूठे संबंध को इस प्रकार से समझा जा सकता है कि कोरकू जनजाति के लोग स्वयं को राजा रावण का वंशज मानते हैं। उनके लोकगीतों और मान्यताओं के अनुसार, रावण उनके इष्ट देवता और रक्षक हैं। इस समाज में रावण को एक अत्याचारी राजा के रूप में नहीं, बल्कि एक न्यायप्रिय आदिवासी राजा और भगवान शिव (महादेव) के परम भक्त के रूप में देखा जाता है।। विदर्भ के अमरावती जिले के मेळघाट क्षेत्र के कोरकू जनजाति का श्री राम का नाम लेना ही जीवन का अंतिम सत्य है। "राम नाम लेना, ओ मैना राम का नाम लेना। चुन-चुन कंकर का महल बनाया, ये महल तेरा कि मेरा, ओ मैना राम का नाम लेना। कवडीकवडी माया जोड़ी ,जोड़ के फिर भी काम में न आवे रे, ओ मैना राम का नाम लेना रे।"

रामनामी जनजाति - रामनामी संप्रदाय के लोगों का कहना है कि वे प्रभु राम से अपने को इस तरह से जोड़े हुए हैं कि कोई उनसे अलग नहीं कर सकता। उन्होंने बताया कि इस संप्रदाय के लोगों का कहना है कि मुगलों ने उन्हें राम से अलग करने की कोशिश की तो सभी ने अपने पूरी शरीर पर राम के नाम का टैटू गुदवा लिया। तभी से उनके संप्रदाय में पूरे शरीर में राम का नाम गोदने की प्रथा शुरू हुई जो अभी तक जारी है। छत्तीसगढ़ के रामनामी संप्रदाय के लिए राम का नाम उनकी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है.एक ऐसी संस्कृति, जिसमें राम नाम को कण-कण में बसाने की परम्परा है.इसी परम्परा के तहत इस संप्रदाय से जुड़े लोग अपने पूरे शरीर पर "राम-राम" का गुदना अर्थात स्थाई टैटू



बनवाते हैं, राम-राम लिखे कपड़े धारण करते हैं, घरों की दीवारों पर राम-राम लिखवाते हैं, आपस में एक दूसरे का अभिवादन राम-राम कह कर करते हैं, यहां तक कि एक-दूसरे को राम-राम के नाम से ही पुकारते भी हैं। ये और बात है कि इस संप्रदाय की आस्था न तो अयोध्या के राम में है और ना ही मंदिरों में रखी जाने वाली राम की मूर्तियों में। इनका राम हर मनुष्य में, पेड़-पौधों में, जीव-जन्तु में और समस्त प्रकृति में समाया हुआ है। इनमें रामनामी संप्रदाय को मानने वाले आज भी लोगों के लिए कौतुहल के विषय बने हुए हैं।

डांगी रामायण - "दंन्डकारण्य" डांग की वन भूमि में रहने वाले वनवासी भगवान राम, सीता और रामायण काल के अन्य वीरों के नाम पर अपने बच्चो का नाम रखकर गर्व करते हैं। आज भी थाली जैसै वाघ्या पर डांगी रामायण की कथा की जाती है और रामकथा कही जाती है। जो की आदिकाल से मौखिक स्वरूप है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी भगत दूसरे को सिखाते आए हैं। भगवान राम की स्मृति इस पहाड़ी और वन क्षेत्र को पवित्र करती है। हनुमानजी और शबरी माता पर बहुत आस्था रखते हैं। डांग के हर एक गांव में आपको हनुमानजी का स्थान मिलेगा। हनुमानजी की माता अंजनी का स्थान डांग में है जो अंजनी कुंड कहा जाता है।

राजाजनक का कड़ा - 'कंगन' डांग के पांच राज्यों में से एक राज्य, लिंगा स्टेट मे रामायण कालीन पंचधातु का कंगन है। लिंगा राज्य के राजवी छत्रसिंह सुर्यवंशी के अनुसार, इस कंगन में बहुत पवित्र और चमत्कारी शक्तियां हैं। जो राजा जनक द्वारा उनके पूर्वजों को चमत्कारी कंगन दिया गया था, वे भक्तिभाव से इस कंगन की पूजा करते रहे हैं। उन्होंने आगे कहा की ये कंगन चोरी हो गया था। लेकिन इस कंगन की शक्ति के कारण जिसने कंगन को चुराया था, उसने अपना मानसिक संतुलन खो दिया और ग्रामीणों को बताया कि उसके पास कंगन है और फिर उसने कंगन को वापस कर दिया। ये कंगन महाराष्ट्र के गड़ी गांव में रहते एक परिवार ने राजा को वापस किया। दक्षिण गुजरात के अन्य जनजाति समुदाय भी श्रीराम-सीता, हनुमानजी, शबरी माता पे अतुट आस्था रखते हैं। देव कार्य या अन्य कोई भी कार्य में राम राम बोलके दारु की धार धरती पे गीराकर कार्य होता है। राम राम बोलके अभिवादन किया जाता है।

लंबाणी जनजाति - बंजारा समुदाय (लबाणी) की 'बंजारा रामायण' में वाल्मीकि और तुलसी कृति राम-कथाओं का एक तरह से 'आदिवासीकरण' हो गया है। बंजारा रामकथा में सीता वरमाला की जगह पगड़ी का प्रयोग करती है। बंजारा समाज में पगड़ी की महिमा है। जनकपुरी में राम की बारात को छप्पन भोग नहीं परोसे जाते बल्कि 'चूरमा और लापसी' की दावत दी जाती है, जो बंजारा समाज में प्रचलित है। रावण द्वारा जब सीता का हरण किया जाता है और राम विलाप करते हुए उन्हें खोजते हैं तब रास्ते, मानवेतर प्राणी और प्रकृति तत्व स्वयं सीता की रक्षा के लिए किए गए

प्रयासों का वर्णन करते हैं। आदिवासी समाज की वैचारिकी और व्यवहार दोनों में मनुष्य से इतर प्राणियों और प्रकृति तत्वों के बीच बहतरीन तालमेल दिखाई देता है। जब राम के कहने पर लक्ष्मण सीता को वन में निस्सहाय छोड़ आते हैं, तब सबसे पहले चार हिरण बेहोश सीता को घेर कर उसकी सुरक्षा में बैठ जाते हैं। इसके बाद कौवा कांव-कांव की आवाज निकालता हुआ कबूतर, बगुला, गिद्ध सहित दूसरे पक्षियों को वहां बुला लेता है। सभी को धरती पर पड़ी सीता की चिंता है। कबूतर अपने पंखों से सीता के मुख पर हवा करता है। बगुला अपनी चोंच में झील से जल भरकर लाता है। गिद्ध जैसा हिंसक पक्षी भी गूलर के फल तोड़कर लाता है। हिरण सीता के मुख को प्यार से चाटता है। सीता को होश आता है। उसे जल पिलाया जाता है। खाने को फल दिए जाते हैं। कौवा कहता है-'माता, हम सब मिलकर आपकी सहायता करने आए हैं।' सीता इन्हें आशीर्वाद देती है। बियाबान वन में ये पशु-पक्षी सीता का साथ देते हैं। बंजारा कथा के अनुसार सीता स्वयंवर के दौरान लक्ष्मण द्वारा धनुष तोड़ने के पश्चात भी उसे राम को वर के रूप में चुनने को विवश किया गया। यह वही राम हैं, जिन्होंने निर्दोष सीता को वनवास दिया। सीता को किसी सवर्ण राजर्षि अथवा ब्रह्मर्षि या देवर्षि के आश्रम में आश्रय नहीं मिलकर एक 'अवर्ण' वाल्मीकि ऋषि की कुटिया में शरण मिली।

निष्कर्ष - वैश्विक रूप में प्रसारित रामकथा आज सर्वविदित है। सनातन सभ्यता की आधारशिला रामकथा की प्राचीनता के विषय में पुष्टि करने में विद्वानों को भी आज तक राम नाम की प्राचीनता की सही संपुष्टि प्राप्त नहीं हो सकी है। रामकथा कितनी पुरानी है इसका सही उद्गम कहाँ से है और वेदों रामकथा के पात्रों की चर्चा वाले पात्र रामकथा के ही हैं, यह भी रहस्य ही है। हालांकि बाल्मीकि जी की रचित रामायण तो प्राप्ति में राम-रावण की कथा का आधार तो बनती है, किंतु राम और रामकथा की वास्तविक पृष्ठभूमि के तार वैदिक साहित्य में सबसे पहले कहां से जुड़े माने जाएँ, क्योंकि रामकथा से संबंधित पात्रों के जहाँ ऋग्वेद में नाम मिलते हैं तो वहीं इन पात्रों के नाम अथर्ववेद में भी प्राप्त होते हैं। इस वैदिक साहित्य में जहाँ रामकथा के पात्रों के नाम प्राप्त होते हैं, वहीं रामायण और महाभारत में भी इन पात्रों की उपस्थिति है। रामकथा की प्राचीनता पर नित्य नवीन शोध होते आए हैं। रामकथा की इस प्राचीनता की क्रमबद्धता में आदिवासी समाज में प्रचलित रामकथाओं के जो संस्करण इस शोध आलेख में प्रस्तुत किए गए हैं। उनके विषय लोक-मान्यताएं दर्शाती हैं कि भारत के मूल निवासियों ने रामायण के पात्रों को अपनी संस्कृति, अपने गांवों और अपने परिवेश में इस तरह समेट लिया है कि वे उनके अपने परिवार जैसे लगते हैं। जिसे उनकी जनजातीय रामायण या लोक-रामायण का हिस्सा माना जाता है।

संदर्भ –

1- सिंह प्रताप योगेंद्र (डॉ.) एवं निरगुणे वसंत, (2017) प्रथम संस्करण, जनजातीय जीवन में राम, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, आईएसबीएन 978-9387155015, पृ.सं. 315

2- वही. पृ.सं. 304
3- वही. पृ.सं. 232
4- सिंह सुरेश के., भारत की जनजातीय और लोक परंपराओं में राम-कथा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 206
5- वही. पृ.सं. 173
6- वही. पृ.सं. 210
7- सिंह प्रताप योगेंद्र, भारतीय भाषाओं में रामकथा: असमिया भाषा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 105
8- वही. पृ.सं. 116
9- इंटरनेट सभार